एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ग्वारपाठा (एलोवेरा) की उन्नत खेती एवं औषधीय महत्व

(*दिव्या साहू[1], राजश्री गाईन[1] एवं मनोज कुमार साहू[2])
[1]इ. गा. कृ. वि. वि., रायपुर, छतीसगढ़
[2]कृषि विज्ञान केन्द्र, रायपुर, छतीसगढ़
*संवादी लेखक का ईमेल पता: 9340924103divyasahu@gmail.com

ग्वारपाठा (एलोवेरा) लिलिएसी कुल का बहुवर्षीय मांसल पौधा है, जो कि उंचाई में 2–3 फीट तक होती है। इसका तना बहुत छोटा तथा जड़े झकड़ा होती है। पत्ते मांसल, फलदार, हरे तथा 1–1.5 फीट लम्बे होते है। पत्तों की चौडाई 1 से 3 इंच तक मोटाई आधी इंच तक होती है। पत्तों के अन्दर धृत के समान चमकदार गुदा होता है, जिसमें अलग सा गंध होता है तथा यह स्वाद में कड़वा होता है। पत्तों को काटने पर एक पीले रंग का द्रव्य निकलता है, जो ठंडा होने पर जम जाता है जिसे कुमारी सार कहते है। ग्वारपाठा (एलोवेरा) जिसे घृतकुमारी के नाम से भी जाना जाता है, मुख्यतः फ्लोरिडा, वेस्ट इंडिज, मध्य अमेरिका तथा एशिया महाद्वीप में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। भारत में पूर्व में विदेशों से लाया गया था किन्तु अब पूरे देश में खास कर शुष्क इलाकों में जंगली पौधों के रूप में मिलता है। भारत में इसकी खेती राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा हरियाणा के शुष्क इलाकों मे की जाती है।

उत्पादन

छत्तीसगढ़ में सन् 2020-21 में ग्वारपाठा (एलोवेरा) का कुल उत्पादन क्षेत्र 240 हेक्टेयर है तथा कुल उत्पादन 2366 मैट्रिक टन है। छत्तीसगढ़ राज्य में ग्वारपाठा (एलोवेरा) का कुल उत्पादन क्षेत्र (45 हेक्टेयर) तथा उत्पादन (629 मैट्रिक टन) दोनों में बिलासपुर जिला अग्रणी हैं।

जलवायु

ग्वारपाठा (एलोवेरा) को मुख्यतःगर्म आर्द्र से शुष्क व उष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए उपयुक्त तापक्रम 13–27 डिग्री सेल्सियस तक होता है।

भूमि तथा भूमि की तैयारी

ग्वारपाठा (एलोवेरा) की खेती असिंचित तथा सिंचित दोनों प्रकार की भूमि में की जा सकती है। भूमि तैयार करते समय खेत की गहरी अच्छी जुताई होनी चाहिए। वर्षा ऋतु से पहले खेत में एक दो जुताई 20 से 30 से मी की गहराई तक पर्याप्त है। जुताई के समय 10 से 15 टन गोबर की खाद अंतिम जुताई के समय भूमि में एक समान मिला देनी चाहिए।

बुवाई का समय

ग्वारपाठा (एलोवेरा) की खेती सर्दी को छोड़कर वर्ष भर की जा सकती है, किन्तु जुलाई-अगस्त बुवाई का सबसे उपयुक्त समय है।

बीज की मात्र

ग्वारपाठा (एलोवेरा) की बोवाई 3-4 महीने पुराने 4-5 पत्तियों वाले कन्दों से की जाती है। एक एकड़ क्षेत्र के लिए लगभग 5000 – 10000 कन्दों की आवश्यकता होती हैं।

बीज प्राप्ति स्थान

एलोईन तथा जेल उत्पादन की दृष्टि से नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लान्ट जेनेटिक रिसोर्सेस दिल्ली से ग्वारपाठा की कई किस्में विकसित की गई हैं। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय औषधिय एवं सुगंधित पौधा संस्थान (सीमैप), लखनउ ने भी उन्नतशील प्रजाति (अंकचा, एल़ एल 1) विकसित की है। जिन किसानों ने पूर्व ग्वारपाठा (एलोवेरा) की खेती की है, कन्दों के लिए उनसे भी संपर्क किया जा सकता है।

रोपण विधि

इसका रोपण कूंड़ विधि से किया जाता है। इसके लिए खेत में कूंड़ बनाये जाते है। एक मीटर में ग्वारपाठा (एलोवेरा) की दो लाईनें लगेंगी, फिर एक मीटर खाली छोड़कर पुनः एक मीटर में इसकी दो लाईने लगेंगी। इसी तरह सारे खेत में रोंपण किया जाता है। ग्वारपाठा (एलोवेरा) को फलबाग में अन्तरवर्ती फसल की तरह भी लगाया जा सकता है।

सिंचाई

पत्तों में जेल की मात्रा बढ़ाने हेतु समय समय पर इसकी सिंचाई करना आवश्यक है, अतः आवश्यकतानुसार इसमें सिंचाई करते रहना चाहिए।

निकाई गुड़ाई

बुवाई के एक माह बाद पहली निराई गुड़ाई करनी चाहिए तथा प्रतिवर्ष 2-3 गुड़ाई करना चाहिए। समय समय पर खरपतवार भी निकालते रहना चाहिए।

फसल की कटाई

मुख्यतः इस फसल में कीटों तथा बीमारियों का प्रकोप नहीं पाया गया है। कभी कभी दीमक का प्रकोप हो जाता है। रोपण के एक वर्ष बाद इसे परिपक्व होने पर निचली तीन पत्तियों को तेज धारदार हंसिये से काट लिया जाता है। पत्ता काटने की यह क्रिया प्रत्येक 3-4 महीनों में किया जाता है।

उपज

प्रति वर्ष एक एकड़ भूमि से ग्वारपाठा (एलोवेरा) की 200 क्विंटल उपज प्राप्त किया जा सकता है।

बिक्री

ग्वारपाठा (एलोवेरा) के पत्तों से ताजा अवस्था में आर्युवेदिक दवाईयां बनाने वाली कंपनियां तथा प्रसाधन सामग्री निर्माताओं को बेचा जा सकता है।

आय

एक वर्ष बाद ग्वारपाठा (एलोवेरा) से एक लाख तक प्रतिवर्ष आय प्राप्त किया जा सकता है।

ग्वारपाठा (एलोवेरा) का उपयोग एवं औषधिय महत्व

आयुर्वेद के मतानुसार ग्वारपाठा (एलोवेरा) कडुवा, शीतल, रेचक, धातु परिवर्तक, मज्जापर्धक, कृमिनाशक और विषनाशक होता है। आयुर्वेद की प्रमुख दवायें जैसे धृतकारी अचार, कुमारी आसव, कुमारी पाक, चातुवर्गभस्म, मंजी स्याडी, तेल आदि इसके प्रमुख उत्पाद हैं। त्वचा में नयापन लाने के लिए इसके उत्पादों का उपयोग प्राचीनकाल से ही किया जा रहा है। ग्वारपाठा (एलोवेरा) खांसी, जुकाम, सिर दर्द, मुहांसों में फायदेमंद है। पेट से संबंधित विकारों से छुटकारा दिलाने हेतु लाभप्रद है तथा त्वचा में जलन या अन्य विकारों के लिए उपयोगी है।